एम एम एस का कमाल या व्यापार का महाजाल

दिनेश सी शर्मा

करीब दो साल पहले अभिनेत्री करीना कपूर ने दिल्ली के प्रमुख सेल फोन कंपनी की एमएमएस सेवा का उद्घाटन किया था। सेल फोन से उन्होंने पहला संदेश अपने सह-अभिनेता शाहरूख खान को भेजा था - इसमें इनका संदेश बोलता हुआ वीडियो था। उक्त सेल फोन कंपनी के साथ अपने व्यापारिक अनुबंध के चलते करीना और शाहरूख ने एमएमएस संदेशों का आदान-प्रदान किया था। लेकिन इस सेवा का शुभारंभ करते हुए करीना ने शायद सपने में भी यह न सोचा होगा कि एक दिन यही एमएमएस सेवा उनको एक शर्मनाक स्थिति में खड़ा कर देगी। करीना और उनके पुरूष मित्र शाहिद कपूर की एमएमएस तस्वीरों का मामला ठण्डा पड़ चुका है, लेकिन इस कांड और दिल्ली के एमएमएस कांड से कई सवाल उपजे हैं जिनसे आनेवाले समय में समाज को जूझना होगा।

पिछ्ले पांच वर्षों में सेल फोन टेक्नालाजी और सेवाओं का जिस तेज़ी से विस्तार-प्रसार हुआ एमएमएस उसकी एक देन है। एमएमएस यानि मल्टीमिडिया मेसेजिंग सर्विस। इसे हिन्दी में दृश्य-श्रव्य संदेश सेवा कह सकते हैं। इस सेवा के माध्यम से दृश्य-श्रव्य संदेशों का आदान-प्रदान किया जा सकता है। इस सेवा के लिए अलग प्रकार के फोन और विशेष सेवा शुल्क आवश्यक है। एसएमएस यानि शार्ट मेसेजिंग सर्विस - जिससे टेक्सट संदेश भेजे और प्राप्त किए जाते हैं - आम हो चुकी है। इसके लिए आम सेल फोन का इस्तेमाल किया जा सकता है और अतिरिक्त सेवा शुल्क भी नहीं देना पड़ता। लेकिन एमएमएस सेवा का प्रचलन अभी इतना नहीं बढ़ा है। शायद हाल ही कि एमएमएस प्रकरणो के बाद इस सेवा के ग्राहकों की संख्या में बढ़ोत्तरी हो। व्यापारिक आंकड़ों के अनुसार भारत में साल भर में १५०० करोड़ एसएमएस संदेश भेजे जाते हैं, जबकि एमएमएस संदेशों की संख्या ३०० करोड़ रही।

लेकिन मूल सवाल है कि आखिर एमएमएस या एसएमएस जैसी सेवाओं की ज़रूरत ही क्या है? फोन चाहे वह मोबाइल हो या साधारण फोन - का मुख्य उपयोग बातचीत है। मोबाइल सुविधाजनक है क्योंकि आप किसी एक जगह से बंधे हुए नहीं रहते। बातचीत हो रही है फिर दूसरे तामझाम की क्या ज़रूरत? इस प्रश्न के जवाब के लिए हमें पिछ्ले दस-पंद्रह सालों में बेतार टेक्नॉलॉजी के क्षेत्र में आए क्रांतिकारी परिवर्तनों को समझना होगा। वैसे तो बेतार तकनीक बहुत पुरानी है। सेवा और पुलिस में इसका उपयोग हम सभी जानते हैं। मोबाइल फोन का प्रचलन भी विकसित देशों में कुछ दशक पुराना हो चुका है। दिल्ली में भी पहली मोबाइल सेवा महानगर टेलिफोन निगम ने करीब १५ साल पहले शुरू की थी। ये फोन सिर्फ कार में काम करते थे और इनके ग्राहक बेस स्टेशनों का वज़न कुछ किलो होता था। पुरानी सारी मोबाइल सेवाएं एनालॉग टेक्नॉलाजी पर आधारित थीं। यूरोपीय देशों ने एक नई विकसित प्रणाली - जीएसएम का विकास किया और सारी दुनिया में इसका प्रचलन बढ़ा। इसका उपयोग उन देशों में सबसे ज्यादा हुआ जहां मोबाइल सेवा पहले नहीं थी। यहां पर मोबाइल सेवा सीधे नवीनतम जीएसएम प्रणाली से शुरू हुई, जबकि अमरीका जैसे देशों में एनालॉग को हटा कार धीरे-धीरे जीएसएम लाया जा रहा है। सीडीएमए प्रणाली पर आधारित नेटवर्कों को भी डिजिटल में परिवर्तित कर दिया गया है।

बेतार तकनीक में आए इन परिवर्तनों के साथ-साथ मोबाइल फोन उपकरण में भी मूलभूत परिवर्तन आए। जो फोन दस साल पहले एक ईंट के आकार का होता था, आज वही माचिस की डिब्बी के आकार का हो गया है। आकार छोटा होने से साथ-साथ इसकी क्षमता भी बढ़ गई है। कंप्यूटरों में लगने वाले प्रोसेसर की तरह फोन में प्रोसेसर लगने लगे। इसमें डाटा संग्रहण की अपार क्षमता होती है। पहले सिर्फ फोन नंबर और पते अंकित कर फोन डायरी में रखने की सुविधा थी। फिर यही सुविधा संदेशों के लिए हो गयी। फिर छोटे-छोटे गेम्स भी इनमें आने लगे। जब प्रोसेसर की क्षमता और बढ़ी तो फोन में वॉयस संदेश और फोटो संदेशों के संग्रहण की जगह बनी। और फिर फिल्म और वीडियो क्लिप रखने की सुविधा हो गई। इसके साथ ही फोन में कैमरे की आंख भी जुड़ गई जिससे तस्वीरें खींची जा सकती हैं। फोन की स्क्रीन में रंग भी आ गए। साथ ही वीडियो और तस्वीरों को संपादित करने की सुविधा मिल गई। अपनी बनाई गई फिल्मों में आप अपनी पसंद का संगीत या गाने भी मिश्रित कर सकते हैं।

कुल मिला कर फोन बातचीत मात्र का एक साधन नहीं रहा। ये एक ऐसा खिलौना बन गया जिसमें आप गेम्स खेल सकते हैं, फोटो खींच सकते हैं, वीडियो देख सकते हैं, संगीत सुन सकते हैं, ई-मेल भेज सकते हैं, इंटरनेट पर विचरण कर सकते हैं, रेडियो सुन सकते हैं और अपने पसंदीदा टीवी कार्यक्रम भी देख सकते हैं। यानि मोबाइल अब मनोरंजन, सूचना और काम करने का यंत्र बन गया है। इससे वह सभी काम कर सकते हैं जो एक आम कंप्यूटर से होता है - ई-मेल, इंटरनेट, मैसेजिंग, फोटो/संगीत का आदान-प्रदान आदि। यानि धीरे-धीरे सेल फोन कंप्यूटर की जगह ले रहा है। और कंप्यूटर की बनिस्बत इसकी कीमत भी काफी कम है।

बेतार तकनीक के तेज़ी से हुए विकास के चलते सेल फोन सेवाओं का प्रसार काफी बढ़ गया। जिन देशों में आम टेलीफोन सेवा का फैलाव कम था वहां पर मोबाइल सेवा बहुत तेज़ी से बढ़ी। आज कई विकासशील देशों में मोबाइल फोनों की संख्या फिक्सड फोन से अधिक है। भारत भी हाल ही में इन देशों की श्रेणी में शामिल हो गया। अभी मोबाइल फोन की संख्या भारत में ४.७ करोड़ है। चीन में यह संख्या ३१ करोड़ है। हाल ही में जारी एक सर्वे के अनुसार पूरे विश्व में मोबाइल फोन ग्राहकों की संख्या १६० करोड़ है, जो २००६ तक बढ़ कर २०० करोड़ हो जाएगी। इस बढ़ती संख्या में सबसे बड़ा योगदान चीन, भारत और रूस का होगा। १६० करोड़ ग्राहकों से मोबाइल कंपनियों का राजस्व ४१० बिलियन डॉलर से अधिक आंका गया है।

मोबाइल फोन ग्राहकों की बढ़ती संख्या के साथ इस क्षेत्र में कंपनियों में प्रतियोगिता भी बढ़ रही है। इसके चलते फोन काल की दरों में लगातार गिरावट आई है। इसलिए सेवा कंपनियां वायस सेवा के अलावा नई सेवाओं (गैर वायस या डाटा) सेवाओं पर ध्यान देने लगी हैं। पहले एसएमएस सेवा मुत दी जाती थी। जब ये लोकप्रिय हो गई तो इस पर शुल्क लगा दिया गया। इसके बाद एमएमएस सेवा आ गई। वीडियो क्लिप की सेवा आ गई, गेमिंग सेवाएं आ गई हैं। रिंग टोन्स सेवा भी है, जिसमें ग्राहक अपनी मनचाही फिल्मी धुन की रिंग टोन डाउनलोड कर सकते हैं। इन सभी सेवाओं का उद्देश्य है वायस कालों के राजस्व में आई कमी की भरपाई करेगा। यनि ये सभी नई सेवाएं कंपनियों के राजस्व का एक प्रमुख स्रोत हैं।

इसलिए डाटा सेवाओं के आसपास एक पूरा उद्योग खड़ा हो गया है। ग्राहकों को इन सेवाओं के प्रति आकर्षित करने के लिए नए-नए हथकंडे अपनाए जा रहे हैं। फोन सेवा कंपनियां अन्य कंपनियों से मिल कर ये सेवाएं दे रही हैं। टीवी पर दिखाए जाने वाले विभिन्न कार्यक्रमों पर दर्शकों को एसएमएस भेजने को कहा जाता है। इन संदेशों को भेजने का शुल्क केवल सेवा कंपनी को ही नहीं जाता। यह टीवी चैनल के साथ भी बांटा जाता है। संदेश बेचारा दर्शक भेजता है और फायदा होता है फोन कंपनी और टीवी चैनल दोनों को। इसी तरह की कई सेवाएं मोबाइल कंपनियां अन्य कंपनियों के साथ मिलकर चलाती हैं। संगीत कंपनियों के साथ मिल कर फिल्मी गानों के रिंग टोन्स बेचे जा रहे हैं।खेल चैनलों की सहायता से क्रिकेट स्कोर और अन्य जानकारियां फोन पर दी जा रही हैं। अमरीका में डिज़्नी ने कार्टून क्लिप्स और प्लेब्वाय पत्रिका ने नग्न तस्वीरें मोबाइल ग्राहकों को बेचने की सेवा हाल ही में शुरू की है। वह दिन दूर नहीं जब ये सेवाएं भारतीय मोबाइल ग्राहकों को भी उपलब्ध होंगी।

मोबाइल का इंटरनेट से जुड़ना भी इस दिशा में एक नई शुरूआत है। इंटरनेट पर अश्लीलता परोसती लाखों वेबसाइटें हैं। मोबाइल पर इंटरनेट से जुड़ कर इनका विचरण किया जा सकता है और तस्वीरें डाउनलोड भी की जा सकती हैं। एमएमएस और वीडियो सेवा से इनका आदान प्रदान भी किया जा सकता है। 'ब्लू टूथ' टेक्नॉलाजी के जरिए इन चित्रों को बेतार तरंगों से किसी भी अन्य फोन पर या कंप्यूटर पर भेजा जा सकता है।

मोबाइल गेमिंग का कारोबार भी भारत में बहुत बड़ चुका है। एक नवीनतम सर्वे के अनुसार भारत में गेमिंग की मार्किट १७५ करोड़ रूपए सालाना आंकी गई है। यह मार्किट सन २००९ तक १६४० करोड़ रूपए का हो जाएगा लेकिन जिन देशों में गेमिंग बहुत लोकप्रिय है, वहां पर आक्रामक और अश्लील गेम्स भी बढ़े हैं। फिलिपिंस में जहां पर जुआ और कसीनो कानूनी हैं - वहाँ स्कूली बच्चे मोबाइल फोन पर जुआ खेलते पाए गए हैं। भारत में भी कई जगहों से मोबाइल के जरिए एक नंबर की लाटरी और जुआ खेले जाते हैं जो गैर काननी हैं।

लेकिन मोबाइल सेवाओं के इस विस्तृत कारोबार में जुड़े सभी लोग-फोन बनाने वाली कंपनियां, इंटरनेट सेवा कंपनियां और सेवाएं विकसित करने वाली कंपनियां किसी भी बात की जिम्मेदारी लेने से मुकरते हैं। फोन निर्माताओं का कहना है कि वे तो सिर्फ हार्डवियर बना रहे हैं। यदि इनका गलत इस्तेमाल होता है तो इसमें उनका कोई दोष नहीं। सेवा कंपनियों का कहना है कि वे तो ग्राहकों को जोड़ने का एक माध्यम है। ग्राहक क्या बात करते हैं, कैसी तस्वीरें भेजते हैं या कौन सी सेवाएं उपयोग में लाते हैं, इन सबसे उनका कोई सरोकार नहीं। वे कहते हैं कि यदि वे इन सब पर नज़र रखने लगे तो इसका मतलब होगा सेंसरशिप। गेमिंग, रिंग टोन देने वाली कंपनियां भी कोई जिम्मेदारी नहीं लेती क्योंकि उनके ग्राहक तो मोबाइल सेवा कंपनिया हैं। इसी तरह इंटरनेट सेवा प्रदाता भी इंटरनेट के अनुचित उपयोग के जिम्मेदार नहीं है।

कुल मिलाकर आलम यह है कि सभी कंपनियां पैसा कमाना चाहती हैं मोबाइल सेवाओं के जरिए, लेकिन इन सेवाओं से पैदा हो रही विकृतियों या उनके दुरूपयोग की जिम्मेदारी नहीं लेना चाहतीं। कुछ प्रयास हो रहे हैं लेकिन वे नाकाफी हैं। फोन निर्माता नोकिया 'चाइल्ड लॉक' वाला फोन विकसित कर रही है जिससे बच्चे फोन पर इंटरनेट की अश्लील वेबसाइटें नहीं देख सकेंगे। लेकिन कैमरा फोन के इस्तेमाल पर कोई शिक्षा अभियान नहीं चलाया जा रहा है। बल्कि विज्ञापनों में कैमरा फोन से युवकों को अर्धनग्न युवतियों की तस्वीरें खींचते हुए दिखाया जाता है। प्राइवेसी इंटरनेशनल संस्था ने सुझाव दिया कि कैमरा फोन से तस्वीरें लेने पर आम कैमरे की तरह क्लिक आवाज़ आनी चाहिए ताकि जिसकी तस्वीर ली जा रही है उसे पता चल जाए। कैमरा फोन की संख्या में लगातार बढ़ोत्तरी हो रही है। हर दस नए फोन में एक कैमरा फोन होता है। २००८ तक कुल कैमरा फोन की संख्या ६५ करोड़ से अधिक हो जाएगी। यह संख्या साधारण कैमरों की संख्या से कहीं अधिक होगी। साथ ही कैमरा फोन की तकनीक में भी लगातार नई चीजें जुड़ रही हैं। जापान की एक कैमरा फोन कंपनी ने एक ऐसा फिल्टर बनाया है जिससे अंधेरे में भी तस्वीरें ली जा सकती हैं। इस कैमरे से निकली इन्फ्रारेड किरणें कपड़ों को भी भेद सकती हैं। यानि कि इस कैमरे से आप किसी की भी बिना कपड़ों की तस्वीर खींच सकते हैं। जापान की मोबाइल कंपनियां इस फोन को अपनी सेवा में शामिल करने की सोच रही हैं।

कैमरा फोन से लोगों की निजी जीवन में झांकने की प्रवृत्ति के खिलाफ धीरे-धीरे माहौल बन रहा है। सऊदी अरब सरकार ने तो इन पर पाबंदी ही लगा दी। जबकि दक्षिण कोरियाई सरकार ने इन फोनों में "क्लिक" आवाज़ को अनिवार्य बना दिया है। अमरीका में स्कूलो और जिम में कैमरा फोन पर प्रतिबंध लगा दिया है। वहां की कंज्यूमर इलेक्ट्रानिक एसोसिएशन ने कैमरा फोन के इस्तेमाल पर एक आचार संहिता जारी की है। इसके अनुसार उन सभी जगहों पर जहां पर फोटोग्राफी पर प्रतिबंध है (जैसे सुरक्षा संस्थान, एयरपोर्ट और संग्रहालय) वहां पर कैमरा फोन का इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए। १८ साल से कम उम्र के लोगों की तस्वीरें खींचते समय सावधानी बरतनी चाहिए। साथ ही बिना इजाजत के किसी अनजान व्यक्ति की फोटो नहीं लेनी चाहिए। लेकिन भारत में ऐसी कोई आचार संहिता नहीं है और न ही फोन निर्माता या सेवा कंपनियां ग्राहकों को कैमरा फोन के उपयोग के बारे में शिक्षित या सूचित कर रही हैं।

टेक्नॉलॉजी की दौड़, मुनाफे की भूख और बदलते जीवन मूल्यों ने एक जटिल स्थिति पैदा कर दी है। सूचना और अभिव्यक्ति के अधिकार और अश्लील चित्रों के आदान-प्रदान में कहां लकीर खींची जाए, यह बड़ा प्रश्न है। जब आम टेलीफोन पर अश्लील बातचीत पर कोई रोक नहीं होती तो, तो क्या मोबाइल पर अश्लील बातचीत/चित्र पर रोक होनी चाहिए? क्या किसी प्रतिबंध का मतलब सेंसरशिप होगा? क्या इस बहस में फोन निर्माताओं की कोई भूमिका नहीं? क्या नियामक अधिकारियों को कंटेट पर कोई नियम जारी करने चाहिए? भविष्य में ये प्रश्न और भी मुखर हो कर उभरेंगे।